International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)

Available online at : http://euroasiapub.org/current.php?title=IJRESS

Vol. 6 Issue 10, October - 2016, pp. 164~167

ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.225 , | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

''समकालीन कहानियों में चरित्र चित्रण का मूल्यांकन''

डॉ. प्रतिमा सिंह

अतिथि विद्वान– (हिन्दी)
शासकीय कन्या महाविद्यालय, कटनी म.प्र.

सारांश

साहित्य चरित्रों के बिना अधूरा माना गया है। अतः साहित्य चरित्रों का अजायब घर है। साहित्य की हर विधा में किसी न किसी रूप में चरित्र का निर्माण अवश्य किया जाता है। साहित्यकार स्वयं एक चरित्र है और वह साहित्य के माध्यम से चरित्र का निर्माण करता है। साहित्य जीवन से जुड़ा होता है। अतः चरित्र का निर्माण साहित्य के बिना अधूरा है। इस शोध पत्र में समकालीन हिन्दी कहानी में चरित्र चित्रण का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है। चरित्र एक व्यापक शब्द है। इसके अंतर्गत ''साहित्य और जीवन की संबद्धता को तोड़ा नहीं जा सकता इस लिए साहित्य में चरित्रों की निरंतर वृद्धि होती ही रहेगी, कोई भी रचना मानव चरित्र से जुड़े बिना नहीं रह सकती।''[1] कथात्मक साहित्य में चरित्र अवश्य होता है।

''मानव चरित्र एवं व्यक्ति चरित्र में यह अन्तर है कि मानव चरित्र में उसे एक और अद्वितीय चरित्र पर ध्यान केंद्रित होता है।''[2] यहाँ मानव चरित्र का अर्थ वर्ग चरित्र से है और व्यक्ति चरित्र का अर्थ है। समाज में उपलब्ध हर भिन्न प्रकार के व्यक्ति के चरित्र से है।

अपने कथात्मक रूप एवं आकर्षण अभिव्यक्ति के कारण कहानी को विशेष लोकप्रियता मिली है। मानव मन के भाव चित्रों अनुभूतियों एवं कल्पनाओं को भी कहानीकार अपनी रचना के दृश्यपट पर उतारता तथा उन्हें कला का आकर्षण आवरण देता है। बाहरी दुनिया के विभिन्न व्यापारों से मानव–चरित्र के अनेक रूप कैसे बनते एवं बिगड़ते है। उनमें क्या परिवर्तन होता है। इन सब बिन्दुओं की व्याख्या हिन्दी कहानी के द्वारा होती है। पात्र का नाम मात्र लेने से साहित्य में काम नहीं चलता। उसका चरित्रांकन ही उसे महत्व प्रदान करता है। अतः कहा जा सकता है कि ''साहित्य में महत्व पात्र का नहीं चरित्र का है। चरित्र के बिना पात्र की कोई सार्थकता नहीं होगी। पात्र एक पुतला भर है और चरित्र उसका हाड़–माँस युक्त जीवन''[3] साहित्य में चरित्र के साथ–साथ यदा कदा व्यक्तित्व शब्द का भी प्रयोग किया जाता है पर व्यक्तित्व का सम्बन्ध साहित्य से कम और मनोविज्ञान से अधिक है और चरित्र का साहित्य के साथ ''व्यक्तित्व में चरित्र की स्थिति सीमित और केन्द्रित होती है। व्यक्ति को व्यापकता में चरित्र की भूमिका महत्वपूर्ण होते हुए भी संक्षिप्त है। व्यक्तित्व के विभिन्न आधारों में से चरित्र एक आधार है। वह व्यक्तित्व की सीमा के भीतर व्यक्तित्व का एक प्रमुख अंग है। व्यक्तित्व से बाहर चरित्र की कोई भिन्न सत्ता नहीं।''[4]

वर्तमान मानव जीवन आर्थिक, नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आस्थाओं, मूल्यों और धारणाओं में महत्वपूर्ण तथा विचारणीय परिवर्तन के कारण विभिन्न सवालों समस्याओं तथा विचार संघर्षों से प्रभावित है। ''कहानी जीवन के उस खण्ड चित्रों को कलात्मक सौंदर्य के आवेष्य में रखकर आकर्षण रूप में प्रयुक्त करती है। आज के मानव–जीवन को समझाने, व्यक्त करने और उसकी सहज संवेदना से पाठक वर्ग को अभिभूत करने की अप्रतिम शक्ति कहानी में निहित है।''[5] पुरानी कहानी, नई कहानी, और समकालीन कहानी के अन्तर को स्व. डॉ. देवीशंकर अवस्थी ने कलकत्ता में आयोजित एक कथा गोष्ठी में इस प्रकार स्पष्ट किया है।'' हिन्दी कथा साहित्य में 60 के बाद से एक नई पीढ़ी आ गई है। यहाँ अब तक की तीनों ही पीढ़ियों के लोग है। 50 से पहले की पीढ़ी (जैनेन्द्र) यथार्थ की सृजन पर बल देती थी। 50 के बाद की पीढ़ी में यथार्थ की अभिव्यक्ति को प्रमुखता मिली। सन् 60 के बाद को पीढ़ी यथार्थ की खोज में लगी हुई है।''[6]

''सपाट चेहरे वाला आदमी''[7] कहानी संग्रह दूधनाथ सिंह का है। इस संग्रह की बहुतचर्चित कहानी ''रीछ'' है। अपराध की चेतना से पैदा हुई असहजता किसी प्रकार व्यक्ति के सन्तुलन को बिगाड़ती है और किस प्रकार वह चेतना रीछ की तरह आक्रामक और भयावह हो सकती है।

इसका प्रभावशाली चित्रण कहानी में हुआ है। ''कोरस'' व्यंग्य धर्मिता के बावजूद उलझी हुई कहानी है। सम्बन्धों के बदल जाने की पीड़ा को ''आइसबर्ग'' आसानी से उभार सकता है। ''सपाट चेहरे वाला आदमी'' और रक्तपात अपनी ही पीड़ा को बड़े सार्थक और कलात्मक ढंग से उभारती है। रक्तपात में मूल्यों एवं सम्बन्धों के टूटने की, बड़े विचित्र ढंग से सब कुछ के बदल जाने की कहानी है।

''आदमीनामा''[8] काशीनाथ सिंह का तीसरा कहानी संग्रह है। इस संकलन की ''निधन'' कहानी में प्रकृति के प्रति निहायत मनोगतवादी मोह को झटकने वाली है। ''अपने लोग '' में दास चपरासी अपने साहब के प्रति अदब में रहने वाले बाबू को जिन तरीकों से जिन्दा करने की कोशिश करता है, वे बेहद नाटकीय है और उसकी परिणति भी एक सतही व्यक्तिगत विद्रोह में होकर रह जाती है। इसलिए ''अपने लोग''[9] व्यवस्था विद्रोह की कहानी नहीं बनने पाती।

''प्रतिदिन''[10] ममता कालिया का कहानी संग्रह है। 'एक जीनियस प्रेम कथा' सिद्ध करती है कि पुरूष का निरंकुश एकाधिकार आज भी कम नहीं हुआ है। वह जब चाहे तब नारी मन को छील कर रख देता है। भौतिक सुखों की मौजूदगी के बावजूद कविता को जब–तक पति द्वारा अपमानित किया जाता है। जहाँ नारी को अपने समानाधिकार की समझ है, वहाँ प्रहार इकतरफा नहीं होता।

''लैला मजनू'' के शोभा पंकज के बीच की रस्साकशी इकतरफा नहीं है, लेकिन पुरूष का पलड़ा भारी है। फलस्वरूप नारी प्रताड़ित एवं दुखी है। उम्र से अड़तीस, जिस्म से अट्ठाईस और स्वरूप से अठारह की प्राध्यापिका मंदिरा की पीड़ा और तरह है, पति की ओर से जाहिर तौर पर कोई शिकायत नहीं है, फिर भी उसे सब कुछ आधा अधूरा लगता है। मंदिरा की पीड़ा यह है कि उसका पति लगभग जड़ है, न हवा उसे हिलाती है और न मौसम मस्ती देता है। 'बसंत सिर्फ एक तारीख' की श्रीमती शांता सक्सेना स्वयं नारी होते हुए भी गर्भवती अध्यापिका की मुसीबत को नहीं समझना चाहती।

समकालीन हिन्दी कहानी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझाने के लिए समकालीन कहानी की उन प्रवृत्तियों पर भी गौर करना पड़ेगा, जो सामाजिक एवं पारिवारिक कहानियों से भिन्न है। समकालीन कहानियों में जिन विषयों में केन्द्र में रखकर कहानी लिखी गई इनमें कृषि सम्बन्धी संघर्ष स्त्री, समाज, दलित समाज, आदिवासी समाज, शोषित समाज एवं अल्पसंख्यक समाज आदि प्रमुख है।

आज के बदलते परिवेश में जब हम किसी के प्रति अतिरिक्त प्रेम दिखाते है, तो यह लगता है कि इसका कोई न कोई स्वार्थ है। रविन्द्र कालिया की ''नौ साल छोटी पत्नी'' में कुछ इसी तरह का चित्रण है। कुशल की पत्नी जब उसके अतिरिक्त प्रेम करती है, उसका व्यवहार सहज नहीं दिखाई देता। वह अपनी पत्नी का उपहास करते हुए कहता है–''क्या कारण है तुम कल से बहुत प्रेम कर रही हो ?''[11]

कृष्णा सोबती की कहानी ''यारों के यार'' में यह व्यक्त किया गया है, कि ईमानदारी और सच्चाई के रास्ते पर चलने में कितनी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। परोपकार एव सत्य के लिए लड़ने वाले कहानी के नायब बाबू भवानी को बेटे की मृत्य पर दफ्तर से छुट्टी नहीं मिलती, दूसरी और चाटुकार खुशामदी माथुर और शर्मा जी को हर समय छुट्टी मिल जाती है। इस तरह का बर्ताव होने पर भी वह अधिकारी कहता है–''भवानी बाबू, यहाँ वहाँ क्या ताकते हो ? बेकार की बहाने बाजी छोड़िये और तुरंत जाकर दफ्तर से अपना पर्सनल फाईल निकाल लाईए''[12] आज का मनुष्य दूसरों के दुःख तकलीफ को समझने की जरूरत नहीं महसूस करता। मशीन के समान वह भी अकड़कर चलता रहता है तथा उसका दिल भी मशीनों और पत्थरों के समान कठोर हो चुका है तथा मनुष्य में सारी संवेदनायें दिनों दिन समाप्त होती जा हरी है। इस प्रकार का चित्रण कई कहानीकारों द्वारा कहानियों के माध्यम से यथार्थ चित्रण किया गया है। समकालीन कहानियों में यथार्थ कहानियों लेखकों द्वारा लिखी गई।

शिवानी का कहानी संग्रह ''पुष्पहार'' है। कहानी संग्रह में एक मंत्री का अत्यन्त मर्मस्पर्शी नाटकीय चित्रण है। मंत्री के जीवन के उतार–चढ़ाव को अत्यन्त सजीवता के साथ व्यक्त किया गया है। उसके मरते समय उसकी माँ का यह कथन ''हाथ जब मंत्री था, तब कितनी मालाएँ लेकर लोग भागते थे, उसके पीछे आज एक माला के लिए तरस रहा है मेरा बेटा।''[13]

सुषमा मुनीन्द्र समकालीन कहानी के उभरती लेखिका है। आपकी कई कहानी संग्रह का प्रकाशन हो चुका है। सुषमा मुनीन्द्र की कहानी जीवन मूल्यों की स्थापना करते हुए आगे बढ़ती है। ''मंगलाय तनो हरि, भागवत पुराण, प्रेम रसायन'' कहानियों सुषमा मुनीन्द्र द्वारा लिखी गई हैं। 'प्रेम रसायन' कहानी एक ऐसी औरत की जीवनी है, जो जीवन भर अपने भाई बहन के उन्नति के लिए कार्य करती रही, उन्हें माता पिता की कमी नहीं खलने दी।

रामरेकर मैडम जो रसायन शास्त्र की प्रोफेसर है, लड़कियाँ उन्हें पसंद नहीं करती मैडम का व्यवहार छात्राओं के प्रति कठोर का था। वे केवल सिन्धु से प्यार करती थी, क्योंकि वे उसके घर में रहती थीं और मैडम के प्रत्येक प्रश्न की उत्तर देती थी। समकालीन कहानीकारों में भीष्म साहनी, हरिशंकर परसाई, राजेन्द्र यादव, शैलेष भटियानी, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोवती, श्रीकान्त वर्मा, ऊषा प्रियंवदा, संजीव, शिवमूर्ति, प्रियम्बद, देवेन्द्र, सुषमा मुनीन्द्र आदि है। समकालीन हिन्दी कहानीकारों द्वारा यथार्थवादी परम्परा

का चित्रण कहानियों में व्यापक पैमाने में किया है। इन कहानीकारों द्वारा समकालीन समय के दबाब को महसूस करते हुए अपनी कहानियों में जिन्दगी के यथार्थ का गंभीर चित्रण किया है। समकालीन कहानी का जो इतिहास और स्वरूप है। उसका गहरा सम्बन्ध समकालीन समय के यथार्थ से है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शोधकर्ता डॉ. सी. भास्कर राव प्रसाद की चरित्र सृष्टि (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध पृ. 10)
2. जयदेव तनेजाःआधुनिक हिन्दी कथा–साहित्य में चरित्र विकास पृ. 84
3. साठोत्तरी हिन्दी कहानी में पात्र और चरित्र चित्रण डॉ. राम प्रसाद पृ. 2
4. साठोत्तरी हिन्दी कहानी में पात्र और चरित्र चित्रण डॉ. राम प्रसाद पृ. 2
5. साठोत्तरी हिन्दी कहानी में पात्र और चरित्र चित्रण डॉ. राम प्रसाद पृ. 6
6. डॉ. शिव प्रसाद सिंह : आधुनिक परिवेश एवं नव लेखन पृ.170
7. दूधनाथ सिंह सपाट चेहरे वाला आदमी
8. काशीनाथ सिंह आदमी नामा
9. सं. राजेन्द्र मेहरोत्रा, श्याम किशोर, आदमी नामा, दासू चपरासी से जनाब तक पृ. 162
10. ममता कालिया, प्रतिदिन
11. रवीन्द्र कालिया – नौ साल छोटी पत्नी पृ. 341
12. कृष्णा सोवती–यारों के यार तीन पहाड़ द्वि सं. 1970 पृष्ठ 16